Knowledgeable Research* –Vol.01, No.05, *December 2022

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

महर्षि अरविंद एवं उनकी शिक्षण पद्धतियाँ

अरुणा जौहरी

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय,गजरौला

zoologyss24@gmail.com

****

Keywords: *महर्षि अरविंद, दर्शन, शिक्षण विधियाँ, मनोवैज्ञानिक विधि*

****

शिक्षण पद्धतियाँ:

ऋषि अरविंद घोष शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि “मनुष्यों में पहले से ही सुप्त शक्तियों का अनावरण और विकास करना है। मस्तिष्क को ऐसा कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता जो कि जीव की आत्मा के आवरण में सुप्त ज्ञान के रूप में पहले से ही गुप्त न हो ।[3] अरविंद जी ने ऐसी शिक्षण विधियों का समर्थन किया है जो बालक की सुप्त शक्तियों का जागरण करती है। अरविंद क्रमिक विधि अर्थात् एक-दो विषयों के अध्ययन के बाद अन्य विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने की बात करते है और कहीं-कहीं बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए अनेक विषयों और विकास की शिक्षा एक साथ करने की बात करते हैं।

शिक्षण-कार्य इस प्रकार का होना चाहिए जिसे पढ़कर बच्चे की स्वयं रूचि जाग्रत हो। यदि शिक्षण रुचिकर होगा तो बच्चों को इस विषय में कोई कठिनाई नहीं होगी और शीघ्र ही बच्चा उस विषय को आत्मसात कर लेगा । वह प्राथमिक स्तर पर कहानी विधि का प्रयोग करने की बात करते थे। शिक्षा की व्यवस्था मातृभाषा के माध्यम से होनी चाहिए | बच्चों को क्रिया करने के अधिक से अधिक अवसर देने चाहिए और उन्हें स्वयं के अनुभव को सीखने देना चाहिए।

महर्षि अरविंद वर्णित शिक्षण पद्धति :

श्री अरविंद ने निम्नलिखित शिक्षण विधियों का समर्थन किया है-

1. रुचि के आधार पर शिक्षा :

वर्तमान युग में मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा शिक्षा देने पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। अतः श्री अरविंद जी ने रुचियों के आधार पर बालक को शिक्षा देने की प्रक्रिया पर जोर दिया है उनका विचार है कि बालक के ऊपर कोई विचार या ज्ञान थोपना नहीं चाहिए।शिक्षा के क्षेत्र में बालक को पूर्ण स्वतंत्रा होनी चाहिए, जिससे वह अपनी रूचि के अनुकूल ज्ञान प्राप्त कर सके।

2. भाषा- ज्ञान:

श्री अरविंद का विचार था कि बच्चों के लिए जिन्हें विदेशी भाषा का बोध नहीं होता है,विदेशी भाषा में शिक्षा पाने से बढकर हानिकारक कुछ भी नहीं है।अत: श्री अरविन्द बालक को मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देने के पक्षपाती थे।उनका विचार था कि बालक को सर्वप्रथम मातृभाषा का ज्ञान कराना चाहिए, मातृभाषा के ज्ञान द्वारा वह अन्य भाषाओं एवं अन्य विषयों का ज्ञान भी प्राप्त कर सकता है ।बालक की स्म्रति,तर्क, कल्पना-शक्तियों का विकास मातृभाषा द्वारा होता है।

3. स्व-प्रयत्न और स्वानुभव द्वारा सीखना :

श्री अरविंद रटने की विधि का विरोध करते थे। उनके अनुसार वच्चे को स्व-अनुभव और स्वप्रयत्न द्वारा सीखना चाहिए। वच्चे को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए चाहिए और उसे स्वयं प्रयत्न करने का अवसर देना चाहिए,क्योंकि स्वप्रयत्न, स्वानुभ तथा निरीक्षण के द्वारा उसे जो व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त होतें हैं ,वह अत्यधिक स्थायी और लाभप्रद होते हैं।

4. प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण वातावरण में शिक्षा :

शिक्षण-विध में श्री अरविंद ने प्रेम और सहानुभूति से ओत-प्रोत वातावरण को बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना है। प्रेम और सहानुभूतियुक्त वातावरण में बालक का मन पढ़ाई में लगा

रहता है और अवधान ध्यान-विच्छेद की समस्या उत्पन्न नहीं होती तथा बालक की ज्ञानोपार्जन करने की इच्छा बढ़ती है। अरविंद आश्रम का वातावरण भी पूर्णरुप से प्रेम तथा सहानुभूति से युक्त तथा आध्यात्मिक था | जैसा कि श्री के सी.पति लिखते हैं-"यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आश्रम का सारा वातावरण एक ऐसी शुद्ध, आनन्दमय व ज्योतिर्मय दिव्यता से परिपूर्ण है, जो किसी भी व्यक्ति को कुछ ही दिनों में अभिभूत कर देती है।

5. करके सीखना :

श्री अरविंद ने करके सीखना अथवा क्रिया-विधि का समर्थन किया है। उनका विचार है कि बालक की शिक्षा में यह अत्यंत होती है।इस विधि में बालक क्रियाशील रहकर स्वयं के अतुभवों से बहुत कुछ सीखता,जो व्याख्यानों आदि विधियों द्वारा नहीं सीख सकता है। इसके अतिरिक्त क्रिया -विधि से प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी व् लाभप्रद होता है ।

6.सहयोगी विधि :

श्री अरविंद जीने क्रियाविधि के साथ ही साथ सहयोगी विधि को भी महत्व दिया है। उनके विचार से जब बालक परस्पर सहयोग से कार्य करतें हैं तो एक-दूसरे के अनुभवों से बहुत लाभ उठाते हैं और साथ ही साथ उनमें सहयोग और समाजिकता के गुणों का विकास होता है।

7 . पाठ्य पुस्तक विधि :

श्री अरविंद जी ने उपर्युक्त नवीन विधियों का समर्थन भी किया है।तथापि पाठ्य पुस्तक विधि का समर्थन भी किया है । उनका विचार है कि बालक को रटने की प्रवृति को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए,परन्तु अच्छी पुस्तकों से परिचित कराया जाना चाहिए | बालक को किसी विषय का क्रमबद्ध और विशिष्ट ज्ञान प्रदान करने के लिए पुस्तकों को होना आवश्यक है। अरविंद आश्रम में उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को विभिन्न देशों के शासन-विधान, दर्शन और श्री अरविंद जी की पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ता है।

8. समकालीन या अनुक्रमिक शिक्षण :

यद्यपि श्री अरविंद मनोवैज्ञानिक शिक्षण पद्धतियों के अनुसार शिक्षा देने का समर्थन करते थे परन्तु वर्तमान शिक्षण पद्धतियों से वह संतुष्ट नहीं थे। उनका कहना था-'भारत में

आधुनिक शिक्षण की एक विषम चीज जो असंगत की हद तक पहुँच गई है, वह यह है कि हर चीज थोड़ी-थोड़ी करके, फुटकर रूप में पढ़ाई जाती है और परिणाम यह है कि जो विषय एक वर्ष में अच्छी तरह सिखाया जा सकता है, वह बुरी तरह से सात वर्षों में सीखा जाता है और बालक पूरी तरह से तैयार हुए बिना ही विद्यालय से निकल आता है | उसके पास ज्ञान के अपूर्ण पैकेट तो होते हैं, पर वह मानव ज्ञान के किसी महा विभाग का भलीभाँति ज्ञाता नहीं बन पाता। यह तो ऐसा है जैसे किसी त्रिकोण को उसके शिखर बिंदु पर खड़ा कर दिया जाये और यह आशा की जाये की वह टिका रहेगा।

उनका विचार है कि पहले बच्चों को एक या दो विषयों का ज्ञान देना चाहिए। जब वह एक या दो विषयों का ज्ञान अच्छी तरह से ग्रहण कर ले तब दूसरे विषय लिए जाएँ। इस शिक्षण से यह लाभ होगा कि विविध सूचनाएं मिलने के स्थान पर विद्यार्थी को संस्कृति का गहरा उदात्त और वास्तविक ज्ञान होगा।

9. विभिन्न विषयों की शिक्षण पद्धति:

श्री अरविन्द का मत है कि बालक की शिक्षा वर्णमाला से प्रारंभ नहीं होनी चाहिए| उसे प्रकृति का निरीक्षण कराना चाहिए और प्राकृतिक चीजों से परिचित कराना चाहिए। इसके बाद शब्दों का ज्ञान देना चाहिए। बालक पहले शब्द,रूप,अर्थ का समर्पण बोध करे, तत्पश्चात् विभिन्न शब्दों की समानताएं एवं असमानतायें समझे। इससे व्याकरण की शिक्षा भी मिलती है तथा साहित्यिक योग्यता भी बढती है।

विज्ञान और भूगोल शिक्षण में छात्र की जिज्ञासा प्रवृत्ति को उद्बुद्ध करना आवश्यक है। प्राकृतिक पदार्थों के निरीक्षण को प्रोत्साहित करना चाहिए। भूमि तथा पाषाण के निरीक्षण द्वारा भूगर्भशास्त्र सीखें | पशुओं के सूक्ष्म निरीक्षण से जीवविज्ञान सीखें। खगोल विद्या सीखने के लिए तारों का निरीक्षण आवश्यक है।छात्र की जिज्ञासा और बौद्धिक चेतना को दर्शन पढ़ाने में भी उदबुद्ध करना चाहिए | इतिहास इस प्रकार पढ़ाया जाए कि बालकों में देशप्रेम तथा वीर पूजा की भावना जागृत हो |

1. पाण्डेय डा. रामशकल : शिक्षादर्शन, 994, पृष्ठ 230.

2. विद्यावाचस्पति, इन्द्र : आर्य समाज का इतिहास (भाग-।), पृष्ठ 43.

3. श्री अरबिंदो : दी सिंथेसिज ऑफ योग, श्री अरबिन्दो लाइब्रेरी, न्यूयार्क, |950, पृष्ठ 2.

4. व्यभा, 184

5. व्यभा, 176

6. व्यभा. 178

7. यजु,भा. 856, भावार्थ

8.यजुभा. 12.88, भावार्थ पांडिचेरी

9. (पुरोधा', अप्रैल 977, पृष्ठ 1, अरविंद सोसायटी , आश्रम-2 .